10 नागार्जुन

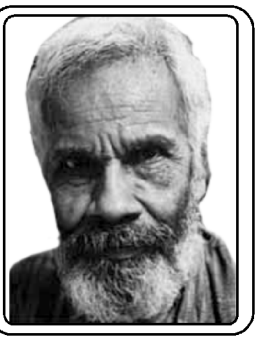

जीवन-परिचय–श्री वैद्यनाथ मिश्र (यात्री : नागार्जुन) का जन्म दरभंगा जिले के सतलखा ग्राम में सन् 1911 ई0 में हुआ था। इनका आरम्भिक जीवन अभावों का जीवन था। जीवन के अभाव ने ही आगे चलकर इनके संघर्षशील व्यक्तित्व का निर्माण किया। व्यक्तिगत दुःख ने इन्हें मानवता के दुःख को समझने की क्षमता प्रदान की। इनके जीवन की यही रागिनी इनकी रचनाओं में मुखर हुई है। 5 नवम्बर, सन् 1998 ई0 को इनकी मृत्यु हो गयी।

कवि : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म–**30 जून, 1911 ई0।
- **जन्म-स्थान–**सतलखा (दरभंगा)।
- **वास्तविक नाम–**वैद्यनाथ मिश्र।
- **मृत्यु–**5 नवम्बर, सन् 1998 ई0।

साहित्यिक परिचय–इनके हृदय में सदैव दलित वर्ग के प्रति संवेदना रही है। अपनी कविताओं में ये अत्याचार-पीड़ित, त्रस्त व्यक्तियों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करके ही सन्तुष्ट नहीं हो गये, बल्कि उनको अनीति और अन्याय का विरोध करने की प्रेरणा भी दी। सम-सामयिक, राजनीतिक तथा सामाजिक समस्याओं पर इन्होंने काफी लिखा है। व्यंग्य करने में इन्हें संकोच नहीं। तीखी और सीधी चोट करनेवाले ये अपने समय के प्रमुख व्यंग्यकार थे। इनकी रचनाओं पर उत्तर प्रदेश का **'भारत-भारती',** मध्य प्रदेश का **'कबीर'** तथा बिहार का **'राजेन्द्र प्रसाद'** सम्मान प्राप्त हुआ। इन्हें 1965 में साहित्य अकादमी पुरस्कार और 1994 में साहित्य अकादमी फेलो के रूप में नामांकित कर सम्मानित किया गया।

नागार्जुन जीवन के, धरती के, जनता के तथा श्रम के गीत गानेवाले ऐसे कवि हैं, जिनकी कविताओं को किसी वाद की सीमा में नहीं बाँधा जा सकता। अपने स्वतन्त्र व्यक्तित्व की भाँति इन्होंने अपनी कविता को भी स्वतन्त्र रखा है।

रचनाएँ—उपन्यास–*'रतिनाथ की चाची', 'बलचनमा', 'नयी पौध', 'बाबा बटेसरनाथ', 'दुःखमोचन' और 'वरुण के बेटे', दुःखमोचन, उग्रतारा, कुंभीपाक, पारो, आसमान में चाँद तारे।*

काव्य–*'युगधारा', 'सतरंगे पंखोंवाली', 'प्यासी-पथरायी आँखें', 'खून और शोले', 'हजार-हजार बाँहोंवाली', 'तुमने कहा था', पुरानी जूतियों का कोरस, आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने, इस गुबार की छाया में, ओममंत्र, भूल जाओ पुराने सपने, रत्नगर्भ, खिचड़ी विप्लव देखा हमने, तालाब की मछलियों।*

मैथिली रचनाएँ–चित्रा, पत्रहीन नग्न गाछ (कविता संग्रह), पारो, नवतुरिया (उपन्यास), **बांग्ला रचनाएँ** : मैं मिलिट्री का पुराना घोड़ा (हिन्दी अनुवाद), ऐसा क्या कह दिया मैंने–नागार्जुन रचना संचयन।

व्यंग्य—अभिनन्दन।

निबन्ध संग्रह—अन्न हीनम क्रियानाम।

बाल साहित्य—कथामंजरी-भाग-1, कथामंजरी भाग-2, मर्यादा पुरुषोत्तम, विद्यापति की कहानियाँ।

नागार्जुन जी की शैली—नागार्जुन जी की शैली पर उनके व्यक्तित्व की अमिट छाप है। वे अपनी बात अपने ढंग से कहते हैं, इसलिए उनकी काव्य-शैली किसी से मेल नहीं खाती। उनकी कविताएँ प्रगति और प्रयोग के मणिकांचन संयोग के कारण एक प्रकार के सहज भाव-सौन्दर्य से दीप्त हो उठी हैं। वे अपनी ओर से अपनी शैली में भाषा का न तो शृंगार करते दीख पड़ते हैं और न रस-परिपाक की योजना का अनुष्ठान करते हैं। उनके भाव स्वयं ही अपनी अभिव्यक्ति के अनुकूल अपनी भाषा के रूप-निर्माण कर उसमें रस की प्रतिष्ठा कर लेते हैं इसलिए उनकी शैली स्वाभाविक और पाठकों के हृदय में तत्सम्बन्धी भावनाओं को उद्दीप्त करनेवाली होती है। उन्होंने अधिकांशतः मुक्तक काव्यों की ही रचना की है। मुक्तक काव्य दो प्रकार के होते हैं—(1) भाव-मुक्तक और (2) प्रबन्ध-मुक्तक। भाव-मुक्तक दो प्रकार के होते हैं—(i) गेय और (ii) सुपाठ्य। नागार्जुन जी की अधिकांश भाव-मुक्तक सुपाठ्य हैं। उनके सुपाठ्य भाव-मुक्तक उनकी भावाभिव्यक्ति के अनुरूप कई प्रकार के हैं। कुछ भाव-मुक्तकों में प्रगति और प्रयोग का मणिकांचन संयोग है, कुछ में प्रगतिवादी स्वर मुखरित हो उठा है, कुछ में ग्राम्य एवं नागरिक जीवन की संघर्षमय परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण है, कुछ में प्रणय-निवेदन है, कुछ में प्रकृति-चित्रण है और कुछ में शिष्ट-गम्भीर हास्य तथा सूक्ष्म तीखे व्यंग्य की सृष्टि है। अपने मुक्तकों में उन्होंने मात्रिक छन्दों को स्थान देने के साथ अतुकान्त छन्दों को भी स्थान दिया है। 'युगधारा' में उनकी काव्य-शैली की समस्त विशेषताएँ देखी जा सकती हैं। उनकी काव्य-शैली में न तो अलंकारों के प्रयोग के प्रति विशेष आग्रह है और न रस-परिपाक के प्रति। फिर भी अलंकारों में उपमा, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास आदि के अनेक उदाहरण मिलते हैं। रसों में शृंगार, करुण, हास्य, वीर, रौद्र, शान्त आदि की सृष्टि स्वाभाविक ढंग से हुई है। नागार्जुन जी ने अपने काव्य-विषय को तत्सम्बन्धी प्रतीकों के माध्यम से उभारने में अच्छी सफलता प्राप्त की है। उन्होंने अपने स्वतन्त्र व्यक्तित्व की भाँति अपनी काव्य-शैली को भी स्वतन्त्र रखने की चेष्टा की है।

नागार्जुन जी की भाषा—नागार्जुन जी की भाषा अधिकांशतः लोक भाषा के अधिक निकट है। इसलिए उनकी भाषा सहज, सरल, बोधगम्य, स्पष्ट, स्वाभाविक और मार्मिक प्रभाव डालनेवाली है। कुछ थोड़ी-सी कविताओं में संस्कृत के क्लिष्ट-तत्सम, विसतन्तु, मदिरारुण, उन्माद आदि शब्दों का प्रयोग अधिक मात्रा में अवश्य किया गया है, किन्तु ऐसे शब्दों के प्रयोग से उनकी भावाभिव्यक्ति में बाधा नहीं पड़ती है। संस्कृत, पालि और प्राकृत भाषाओं के ज्ञाता होकर भी उनमें पाण्डित्य-प्रदर्शन की लालसा नहीं है। जिन कविताओं में संस्कृत की क्लिष्ट-तत्समों की अधिकता है उनमें भी पाण्डित्य-प्रदर्शन के प्रति उनका आग्रह न होकर भावाभिव्यक्ति के अनुरूप भाषा की प्रतिष्ठा करने का स्वाभाविक प्रयास है। उन्होंने अपनी भाषा में तद्भव तथा ग्रामीण शब्दों का भी यत्र-तत्र प्रयोग किया है। किन्तु ऐसे शब्द उनकी भावाभिव्यक्ति में बाधक न होकर उसमें एक विविध प्रकार की मिठास उत्पन्न करते हैं। कुछ कविताओं को छोड़कर उन्होंने अपनी शेष कविताओं में लोक-मुख को वाणी दी है। उनकी भाषा में न तो शब्दों की तोड़-मरोड़ है और न उस पर मैथिली का प्रभाव है।

♦

बादल को घिरते देखा है

अमल धवल गिरि के शिखरों पर, बादल को घिरते देखा है।
छोटे मोटे मोती जैसे, अतिशय शीतल वारि कणों को
मानसरोवर के उन स्वर्णिम-कमलों पर गिरते देखा है।
तुंग हिमालय के कंधों पर छोटी बड़ी कई झीलों के
श्यामल शीतल अमल सलिल में
समतल देशों के आ-आकर
पावस की ऊमस से आकुल
तिक्त मधुर बिसतंतु खोजते, हंसों को तिरते देखा है।

एक दूसरे से वियुक्त हो
अलग अलग रहकर ही जिनको
सारी रात बितानी होती
निशा काल के चिर अभिशापित
बेबस उन चकवा-चकई का,
बन्द हुआ क्रन्दन फिर उनमें
उस महान सरवर के तीरे
शैवालों की हरी दरी पर, प्रणय कलह छिड़ते देखा है।

कहाँ गया धनपति कुबेर वह,
कहाँ गयी उसकी वह अलका?
नहीं ठिकाना कालिदास के,
व्योम-वाहिनी गंगाजल का!
ढूँढ़ा बहुत परन्तु लगा क्या, मेघदूत का पता कहीं पर!
कौन बताये यह यायावर, बरस पड़ा होगा न यहीं पर!

जाने दो वह कवि-कल्पित था,
मैंने तो भीषण जाड़ों में, नभचुम्बी कैलाश शीर्ष पर
महामेघ को झंझानिल से, गरज-गरज भिड़ते देखा है।

दुर्गम बर्फानी घाटी में,
शत सहस्त्र फुट उच्च शिखर पर
अलख नाभि से उठने वाले
अपने ही उन्मादक परिमल
के ऊपर धावित हो-होकर
तरल तरुण कस्तूरी मृग को अपने पर चिढ़ते देखा है।

शत-शत निर्झर निर्झरिणी-कल
मुखरित देवदारु कानन में
शोणित धवल भोज पत्रों से छाई हुई कुटी के भीतर
रंग बिरंगे और सुगन्धित फूलों से कुन्तल को साजे
इन्द्रनील की माला डाले शंख सरीखे सुघर गले में,
कानों में कुवलय लटकाये, शतदल रक्त कमल वेणी में;
रजत-रचित मणि खचित कलामय
पान-पात्र द्राक्षासव पूरित
रखे सामने अपने-अपने,
लोहित चन्दन की त्रिपदी पर
नरम निदाग बाल कस्तूरी
मृग छालों पर पल्थी मारे
मदिरारुण आँखों वाले उन
उन्मद किन्नर किन्नरियों की
मृदुल मनोरम अँगुलियों को वंशी पर फिरते देखा है।

(नागार्जुन : 'प्यासी-पथराई आँखों से')

अभ्यास प्रश्न

● विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—
   (क) निशा काल ..... के तीरे।
   (ख) दुर्गम ..... हो-होकर।
   (ग) रजत-रचित ..... त्रिपदी पर।
   (घ) कहाँ गया धनपति ..... भिड़ते देखा है।
2. नागार्जुन का जीवन-परिचय देते हुए भाषा-शैली का उल्लेख कीजिए।
3. नागार्जुन का जीवन-वृत्त लिखकर उनके साहित्यिक योगदान का उल्लेख कीजिए।
4. नागार्जुन के साहित्यिक अवदान एवं रचनाओं पर प्रकाश डालिए।
5. नागार्जुन का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए तथा उनके काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

● लघु उत्तरीय प्रश्न

1. नागार्जुन ने अपनी कविता 'बादल को घिरते देखा है' में प्रकृति के किस रूप के सौन्दर्य का वर्णन किया है?
2. *'महामेघ को झंझानिल से गरज-गरज भिड़ते देखा है'* पंक्ति में प्राकृतिक वर्णन के अतिरिक्त मुख्य भाव क्या है?
3. कवि ने नरेतर (मनुष्य से इतर) दम्पतियों का किस प्रकार वर्णन किया है?
4. 'बादल को घिरते देखा है' शीर्षक कविता का सारांश लिखिए।

● अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. नागार्जुन किस युग के कवि हैं?
2. नागार्जुन की रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
3. नागार्जुन की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।
4. 'बादल को घिरते देखा है' शीर्षक कविता का सारांश लिखिए।
5. 'बादल को घिरते देखा है' शीर्षक कविता का उद्देश्य क्या है?
6. 'बादल को घिरते देखा है' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए।

● काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित काव्य पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—

   (अ) श्यामल शीतल अमल सलिल में
   समतल देशों के आ-आकर
   पावस की ऊमस से आकुल
   तिक्त मधुर बिसतंतु खोजते, हंसों को तिरते देखा है।

   (ब) मृदुल मनोरम अंगुलियों को वंशी पर फिरते देखा है।
2. निम्नलिखित शब्द-युग्मों से विशेषण-विशेष्य अलग कीजिए—

   अतिशय शीतल, स्वर्णिम कमलों, प्रणय कलह, रजत-रचित।

● आन्तरिक मूल्यांकन

(1) बादल को घिरते हुए आपने भी देखा है। उन दृश्यों पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

(2) बाबा नागार्जुन को जनकवि कहा जाता है, ऐसे जनकवियों की एक सूची बनाइए।

♦